जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय,
बलिया (उ० प्र०)

JANNAYAK CHANDRASHEKHAR UNIVERSITY, BALLIA

Curriculum in Accordance with National Education Policy - 2020

Programme Name :	**B.A.**
Subject :	**SANSKRIT**

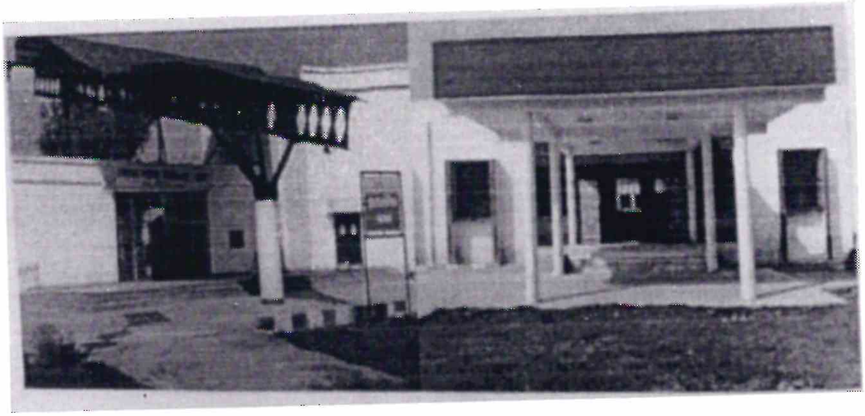

Department of Sanskrit

Jannayak Chandrashekhar University, Ballia

Shaheed Smarak, Near Surha Taal, Basantpur, Ballia - 277301, Uttar Pradesh, India

Sturture for Four years undergraduate Programme in Accordance with National Education Policy - 2020 and Common Minimum Syllabus

SANSKRIT

Semester-wise Title of the Papers

Year	Sem.	Course Code	Paper Title	Theory/Practical	Total Credits
1st	I	A020101T	संस्कृत पद्य साहित्य एवं व्याकरण	Theory	6
	II	A020201T	संस्कृत गद्य साहित्य एवं व्याकरण	Theory	6
2nd	III	A020301T	संस्कृत नाटक एवं व्याकरण	Theory	6
	IV	A020401T	काव्यशास्त्र एवं संस्कृत लेखन कौशल	Theory	6
3rd	V	A020501T	वैदिक वाङ्मय एवं भारतीय दर्शन	Theory	6
		A020502T	व्याकरण एवं भाषा विज्ञान	Theory	6
	VI	A020601T	आधुनिक संस्कृत साहित्य	Theory	6
		A020602T	क. (वैकल्पिक) योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा	Theory	6
		A020603T	ख. (वैकल्पिक) आयुर्वेद एवं स्वास्थ्य विज्ञान	Theory	6
4th	VII	A020701T	वैदिक वाङ्मय	Theory	5
		A020702T	दर्शन : सांख्य एवं न्याय-वैशेषिक	Theory	5
		A020703T	व्याकरण एवं भाषा विज्ञान	Theory	5
		A020704T	गीतिकाव्य एवं नाटिका	Theory	5
	VIII	A020801T	वैदिक वाङ्मय	Theory	5
		A020802T	दर्शन : सांख्य एवं न्याय-वैशेषिक	Theory	5
		A020803T	व्याकरण एवं भाषा विज्ञान	Theory	5
		A020804T	काव्य एवं नाट्यशास्त्र	Theory	5

नोट :

- स्नातक के 5वें सेमेस्टर में प्रत्येक विद्यार्थी को उसके द्वारा चुने गये दो विषयों में से किसी एक विषय (सम्बन्धित विषय के शिक्षक/शिक्षकों के दिशा निर्देशन) में माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट (एम.आर.पी.) के लिए एक शीर्षक का चयन करना होगा, जिसे वह पूर्ण करके 6वें सेमेस्टर में मूल्यांकन के लिए जमा करेगा।
- स्नातक के 7वें सेमेस्टर में प्रत्येक विद्यार्थी को उसके द्वारा चुने गये विषय से (सम्बन्धित विषय के शिक्षक/शिक्षकों के दिशा निर्देशन) में रिसर्च प्रोजेक्ट (आर.पी.) के लिए एक शीर्षक का चयन करना होगा, जिसे वह 8वें सेमेस्टर में पूर्ण कर मूल्यांकन हेतु जमा करेगा।

Rahul

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

विषय :- संस्कृत

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर	प्रथम	
प्रश्नपत्र कोड ·	A020101T	
प्रश्नपत्र शीर्षक	संस्कृत पद्य साहित्य एवं व्याकरण	
क्रेडिट	6	अधिकतम अंक 75 +25

पाठ्यक्रम उद्देश्य –

- विद्यार्थियों को संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय कराकर काव्य के विभिन्न भेदों से परिचय कराना।
- उनमें संस्कृत पद्य में प्रयुक्त रस, छंद, अलंकारों को समझने की क्षमता विकसित करना।
- संस्कृत व्याकरण के ज्ञान से वैदिक भाषा के अनुपम स्वरूप से अवगत कराना।
- स्वर, व्यंजन एवं विसर्ग संधि का विशिष्ट ज्ञान एवं उनके अनुप्रयोग का कौशल विकिसित कराना।

अधिगम उपलब्धि –

- विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य के विभिन्न भेदों से परिचित हो सकेंगे।
- वह संस्कृत साहित्य की सुगीतात्मकता का सौंदर्यबोध कर सकेंगे।
- पद्य में निहित सूक्तियों एवं सुभाषित वाक्यों के माध्यम से उनका नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन होगा।
- संस्कृत व्याकरण का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से सुपरिचित हो सकेंगे।
- स्वर, व्यंजन एवं विसर्ग संधि का विशिष्ट ज्ञान एवं उनके अनुप्रयोग का कौशल विकसित होगा।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
I	संस्कृत काव्य एवं व्याकरण का सामान्य परिचय एवं प्रमुख आचार्य प्रमुख आचार्य – महाकवि वाल्मीकि, महाकवि वेदव्यास, महाकवि कालिदास, महाकवि भारवि, महाकवि माघ, श्रीहर्ष, पाणिनि कात्यायन,पतंजलि किरातार्जुनीयम्- प्रथम सर्ग (सम्पूर्ण) (व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न)
II	कुमारसंभवम्- प्रथम सर्ग (श्लोक संख्या 1 से 25) (व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न) नीतिशतकम् (श्लोक संख्या 1 से 25) (अर्थ एवं मूल्यपरक प्रश्न)
III	संज्ञा प्रकरण (लघु सिद्धांत कौमुदी) अच् सन्धि सूत्र व्याख्या एवं सूत्र निर्देश पूर्वक सन्धि एवं सन्धि विच्छेद

Rahul

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
IV	हल् सन्धि (सूत्र व्याख्या एवं सूत्र निर्देश पूर्वक सन्धि एवं सन्धि विच्छेद) विसर्ग सन्धि (सूत्र व्याख्या एवं सूत्र निर्देश पूर्वक सन्धि एवं सन्धि विच्छेद)

संस्तुत ग्रंथ:-

- किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग), डॉ राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद
- किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग), डॉ जनार्दन शास्त्री, मोतीलाल वनारसीदास पब्लिकेशन, दिल्ली
- कुमारसंभवम् (प्रथम सर्ग), डॉ उमेश चंद्र पांडे, प्राच्य भारतीय प्रकाशन, गोरखपुर
- कुमारसंभवम् (प्रथम सर्ग), श्री कृष्णमणि त्रिपाठी, चौखंवा प्रकाशन, वाराणसी
- नीतिशतकम् भर्तृहरि, (व्या0), सावित्री गुप्ता, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली 2008
- नीतिशतकम् भर्तृहरि, समीर आचार्य, प्राच्य भारती प्रकाशन, गोरखपुर
- संस्कृत साहित्य का इतिहास उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखंवा भारती अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुदित 2012
- संस्कृत साहित्य का इतिहास वाचस्पति गैरोला, चौखंवा विद्याभवन वाराणसी, पंचम संस्करण, 1997
- लघु सिद्धांत कौमुदी, वरदराज, भैमी व्याख्या, भीमसेन शासत्री (1-6भाग) भैमी प्रकाशन, दिल्ली 1993
- लघु सिद्धांत कौमुदी, गोविन्द प्रसाद शर्मा एवं आचार्य रघुनाथ शास्त्री, चौखंवा सुरभारती प्रकाशन
- लघु सिद्धांत कौमुदी, डॉ रामकृष्ण आचार्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- लघु सिद्धांत कौमुदी (संज्ञा संधि प्रकरण), डॉ वेदपाल, साहित्य भंडार, मेरठ
- लघु सिद्धांत कौमुदी, डॉ. उमेश चंद पांडे, चौखंवा प्रकाशन

प्रस्तावित सतत मूल्यांकन:-

क. पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथो पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेंट) — 15 अंक

एवं

संस्कृत श्लोकों के शुद्ध उच्चारण की प्रायोगिक/मौखिक परीक्षा

एवं

माहेश्वर सूत्र एवं प्रत्याहार निर्माण विषयक परियोजना कार्य एवं मौखिकी

ख. लिखित परीक्षा (वास्तुनिष्ठ/लघु उत्तरीय) — 10 अंक

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

विषय :- संस्कृत

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर	द्वितीय	
प्रश्नपत्र कोड	A020201T	
प्रश्नपत्र शीर्षक	संस्कृत गद्य साहित्य एवं व्याकरण	
क्रेडिट	6	अधिकतम अंक 75 +25

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- विद्यार्थियों को संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कराकर, गद्य काव्य के भेदों से सुपरिचित कराना।
- सम्बंधित साहित्य के माध्यम से उनका नैतिक एवं चारित्रिक विकास कराना।
- विद्यार्थियों में राष्ट्रभक्ति की भावना प्रबल करना तथा अच्छे नागरिक बनाना।
- अनुवाद कौशल में वृद्धि करना।

(ख) अधिगम उपलब्धि -

- विद्यार्थी संस्कृत गद्य साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर, गद्य काव्य के विभिन्न भेदों से परिचित हो सकेंगे।
- सम्बंधित साहित्य के माध्यम से उनका नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष होगा।
- राष्ट्रभक्ति की भावना प्रबल होगी तथा उत्तम नागरिक बनेंगे।
- अनुवाद कौशल में वृद्धि होगी।
- संस्कृत गद्य के धाराप्रवाह एवं शुद्ध वाचन का कौशल विकसित होगा।
- विद्यार्थी संगणक का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर अधिगम क्षमता में वृद्धि हेतु इसका उपयोग कर सकने में सक्षम होंगे।
- **E-content** एव डिजिटल लाइब्रेरी का उपभोग कर पाने में समर्थ होंगे।
- संस्कृत भाषा और साहित्य के नित-नूतन अन्वेंषण को खोज पाने तथा उससे स्व-ज्ञान कोष में वृद्धि कर पाने योग्य होंगे।
- संगणक के प्रयोग के माध्यम से संस्कृत ज्ञान के प्रचार प्रसार एवं आदान प्रदान करने में कुशल बनेंगे।
- पारंपरिक एवं वैश्विक ज्ञान में सामांजस्य बनाकर ज्ञान की अभिवृद्धि करने एवं जीविकोपार्जन के नए मार्ग खोजने का कौशल विकसित होगा।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
I.	गद्य साहित्य का उद्भव एवं विकास प्रमुख साहित्यकार - बाणभट्ट, दण्डी, सुबंधु, शूद्रक शुभकनासोपदेश - (व्याख्या तथा सम्बन्धित समीक्षात्मक प्रश्न)
II.	शिवराजविजयम् - प्रथम नि:श्वास व्याख्या तथा सम्बन्धित समीक्षात्मक प्रश्न
III.	अनुवाद - हिन्दी से संस्कृत में तथा संस्कृत से हिन्दी में

Rahul Kumar

1V. कंन्यूटर का सामान्य परिचय, संस्कृत की दृष्टि से कंप्यूटर की उपयोगिता, विभिन्न सॉफ्टवेयर कंप्यूटर में संस्कृत- हिन्दी लेखन हेतु उपयोगी टूल्स-यूनिकोड, गूगल इनपुट टूल, गूगल असिस्टेंट एवं वॉइस टाइपिंग आदि। इंटरनेट का प्रयोग एवं वेब सर्च-ई टेक्स्ट, ई बुक्स, ई रिसर्च जनरल, ई मैग्जीन, डिजिटल लाइब्ररी ऑनलाइन टीचिंग लर्निंग प्लेटफॉर्म - जूम, टीम,मीट वेबैक्स ऑनलाइन लर्निंग एवं रिसर्च प्लेटफार्म-स्वयं, मूक, ई-पाठशाला डेलनेट, इनफ्लाइब्रेट, शोधगंगा, गूगल स्कॉलर आदि।
संस्तुत ग्रन्थः- ● शुकनासोपदेश, बाणभट्ट (संपा.) चन्द्रशेखर द्विवेदी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा, प्रथम संस्करण 1886-87 ● शुकनासोपदेश, रामनाथ शर्मा सुमन, साहित्य भंडार, मेरठ ● शुकनासोपदेश, डॉ. महेश कुमार श्रीवास्तव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ● शिवराजविजयम्, अंबिकादत्त व्यास संपा. शिवकरण शास्त्री महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा ● शिवराजविजयम्, डॉ. रमा शंकर मिश्र, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी ● संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी ● साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, डॉ. उमेश चंद्र पांडे, प्राच्य भारतीय संस्थान, गोरखपुर ● अनुवाद चंद्रिका, डॉ. यदुनंदन मिश्र, अनुवाद चंद्रिका, ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी ● अनुवाद चंद्रिका, चंद्रधर हंस नौटियाल, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1999 ● संस्कृत रचना, वी0 एस0 आप्टे, (अनु0) उमेश चंद्र पांडेय, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी 2008 ● रचनानुवाद कौमुदी, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 2011 ● कंप्यूटर का परिचय, गौरव अग्रवाल, शिवा प्रकाशन, इंदौर ● कंप्यूटर फंडामेंटल, पी. के. सिन्हा, बी. पी. बी. पब्लिकेशन, नई दिल्ली ● इनफार्मेशन टेक्नालॉजी, सुमीता अरोरा, धनपत राय पब्लिकेशन, नई दिल्ली
प्रस्तावित सत मूल्यांकनः- क. पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथो पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी — 15 अंक एवं लिखित परीक्षा (वास्तुनिष्ठ लघु उत्तरीय) एवं संस्कृत संभाषण ख. संगणक प्रायोगिक परीक्षा (वास्तुनिष्ठ/लघु उत्तरीय) — 10 अंक

Rahul Kumar

विषय – संस्कृत पाठ्यक्रम	
सेमेस्टर	तृतीय
प्रश्नपत्र कोड	A020301T
प्रश्नपत्र शीर्षक	संस्कृत नाटक एवं व्याकरण
क्रेडिट	6 अधिकतम अंक 75 +25

पाठ्यक्रम उद्देश्य –

- विद्यार्थियों को संस्कृत नाट्य साहित्य को समझने में सक्षम बनाना।
- छात्रों को नाट्य की पारिभाषिक शब्दावली से सुपरिचित कराना।
- नाट्क में प्रयुक्त रस, छंद एवं अंलकारों का सम्यक् बोध कराना।
- नवीन पदों के ज्ञान द्वारा उनके शब्दकोश में वृद्धि करना।

अधिगम उपलब्धि –

- संस्कृत नाट्य साहित्य को सामान्य रूप से समझ सकने में सक्षम होंगे।
- नाटक की परिभाषिक शब्दावली से सुपरिचित होंगे।
- नाटक में प्रयुक्त रस, छंद एवं अंलकारों का सम्यक बोध कर सकेंगे।
- संवाद एवं अभिनय कौशल में पारंगत होंगे।
- नवीन पदों के ज्ञान द्वारा उनके शब्दकोश में वृद्धि होगी।
- भारतीय सांस्कृतिक तत्वों एवं मूल्यों को आत्मसात कर, भारतीयता के गर्व बोध से युक्त उत्तम नागरिक बनेंगें
- व्याकरण परक शब्दों की सिद्धि प्रक्रिया से परिचित हो सकेंगें
- व्याकरण शास्त्र के ज्ञान के माध्यम से शुद्ध वाक्य विन्यास करने की क्षमता का विकास हो सकेगा।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
I.	नाट्य साहित्य परंपरा तथा नाटककार – भास, अश्वघोष, भवभूति, भट्ट नारायण, विशाखदत्त। स्वप्रवासवदत्तम् (प्रथम अंक)
II.	अभिज्ञान शाकुंतलम् (1 से 4 अंक)
III.	रुप सिद्धि– सामान्य परिचय अजन्त प्रकरण (लघु सिद्धांत कौमुदी) पुल्लिंग – राम, सर्व हरि। स्त्रीलिंग – रमा, मति। नपुंसक लिंग – ज्ञान, वारि। सूत्र व्याख्या एवं शब्द रुप सिद्धि

Rahul Kumar

4.	नपुंसकलिंग - इदम्, अहन्। सूत्र व्याख्या एवं शब्द रूप सिद्धि।

संसतुत ग्रंथः-

- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ. कपिल देव द्विवेदी, रामनारायण लाल विजय कुमार प्रकाशन, इलाहाबाद
- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ उमेश चंद्र पांडे, प्राच्य भारतीय संस्थान गोरखपुर
- स्वप्रवासवदत्तम्, श्री तरणीश झा, रामनारायण लाल बेनी माधव प्रकाशन, इलाहाबाद
- स्वप्रवासवदत्तम्, जय कृष्ण दास हरिदास गुप्त, चौखंबा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
- संस्कृत नाटक उद्भव और विकास, डॉ ए. वी. कीथ, अनुवादक उदयभानु सिंह
- नाट्य साहित्य का इतिहास और नाट्य सिद्धांत, जय कुमार जैन, साहित्य भंडार, मेरठ 2012
- संस्कृत के प्रमुख नाटककार और उनकी कृतियां, डॉ गंगासागर राय
- संस्कृत साहित्य का इतिहास उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी पुर्नमुद्रित 2012
- लघु सिद्धांत कौमुदी वरदराज, भैमी व्याख्या, भीमसेन शास्त्री (1-6भाग) भैमी प्रकाशन, दिल्ली1993
- लघु सिद्धांत कौमुदी, गोविंद प्रसाद शर्मा एवं आचार्य रघुनाथ शास्त्री, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन
- लघु सिद्धांत कौमुदी डॉ रामकृष्ण आचार्य विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

प्रस्तावित सतत मूल्यांकनः-

क. पाठ्यक्रम में निर्धारित नाटकों पर आधारित संवाद एवं अभिनय कौशल परीक्षा — 15 अंक

अथवा

पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी

ख. लिखित परीक्षा (वास्तुनिष्ठ/लघु उत्तरीय) — 10 अंक

विषय - संस्कृत पाठ्यक्रम		
सेमेस्टर	चतुर्थ	
प्रश्नपत्र कोड	A020401T	
प्रश्नपत्र शीर्षक	काव्यशास्त्र एवं संस्कृत लेखन कौशल	
क्रेडिट	6	अधिकतम अंक 75 +25

पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- विद्यार्थियों को काव्यशास्त्र के उद्भव और विकास से सुपरिचित कराना और काव्य शास्त्रीय तत्वों को समझने में सक्षम करना।
- छंद-भेद एवं उनके नियमों को समझने में समर्थ बनाना।
- संस्कृत अंलकारों के ज्ञान के माध्यम से काव्य के सौन्दर्य का बोध कराना।
- उनमें कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास करना।
- व्याकरण शास्त्र के ज्ञान से निबंध एवं अनुवाद में निपुण बनाना।

अधिगम उपलब्धि -

- विद्यार्थी काव्यशास्त्र के उद्भव और विकास से सुपरिचित होकर काव्य शास्त्रीय तत्वों को समझने में सक्षम होंगे।
- छंद भेद एवं उनके नियमों को समझने में समर्थ होंगे।
- संस्कृत अंलकारों के ज्ञान के माध्यम से काव्य के सौंदर्य का बोध कर सकेंगं।
- उनमें कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होगा।
- शब्द ज्ञानकोष में वृद्धि होगी।
- व्याकरण शास्त्र के ज्ञान के माध्यम से शुद्ध वाक्य विन्यास कौशल का विकास हो सकेगा।
- विद्यार्थियों में निबंध लेखन क्षमता का विकास होगा।
- संस्कृत पत्र लेखन कौशल में वृद्धि होगी।
- अपठित अंश के माध्यम से विषय वस्तु अवबोध एवं अभिव्यक्ति का कौशल विकसित होगा।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
I.	संस्कृत काव्यशास्त्र परंपरा तथा प्रमुख काव्य शास्त्रीय ग्रंथ एवं आचार्य - भामह, दण्डी, वामन, आनंदवर्धन,मम्मट,कुंतक,क्षेमेंद्र, विश्वनाथ, जगन्नाथ। साहित्य दर्पण (प्रथम परिच्छेद)।
II.	छंद (वृत्तरत्राकर से अधोलिखित छंद) अनुष्टुप, आर्या, वंशस्थ, द्रुतविलंवित, वसंततिलका, इंद्रवज्रा, उपेंद्रवज्रा, उपजाति,मालिनी, मंदाक्रांता, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित। अंलकार (साहित्य दर्पण से अधोलिखित अंलकार) अनुप्रास, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रांतिमान, दृष्टांत, निदर्शना, विभावना, विशेषोक्ति, अर्थान्तरन्यास, समासोक्ति।

III.	निबंध लेखन पत्र- व्यवहार
IV.	अपठित गद्यांश अथवा पद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

संस्तुत ग्रंथः-

- साहित्य दर्पण (विश्वनाथ कविराज), सत्यव्रत सिंह, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी
- साहित्य दर्पण, शालिग्राम शास्त्री मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, वाराणसी
- वृत्तरत्नाकरः श्री केदारभट्ट (व्या.) बल्देव उपाध्याय, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2011
- छन्दोऽलंकारसौरभम्, डॉ. सावित्री गुप्ता, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2009
- छन्दोऽलंकारसौरभम्, प्रो. राजेन्द्र मिश्र, अक्षय वट प्रकाशन
- छंदमंजरी विकास, हरिदत्त उपाध्याय
- काव्यदीपिका, कांति चंद्र भट्टाचार्य, साहित्य भंडार, मेरठ
- काव्यदीपिका, डॉ. बाबूराम त्रिपाठी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुद्रित 2012
- हायर संस्कृत ग्रामर, मोरेश्वर रामचंद्र काले, (हिन्दी अनुवादक) कपिलदेव द्विवेदी, श्री रामनारायण लाल बेनी प्रसाद, इलाहबाद, 2001
- संस्कृत व्याकरण एवं अनुवाद कला, ललित कुमार मंडल, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली 2007
- अनुवाद चंद्रिका, डॉ यदुनंदन मिश्र, अनुवाद चंद्रिका, ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
- संस्कृत रचना, वी0 एस0 आप्टे (अनु0) उमेश चंद्र पांडेय, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी, 2008
- संस्कृत निबंध सुधा, राधेश्याम गंगवार, नागराज प्रकाशन, पिथौरागढ़, 2005

प्रस्तावित सतत मूल्यांकनः-

क. अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी

अथवा

किसी एक छंद अथवा अलंकार के लक्षण एवं न्यूनतम 10 उदाहरण (संगीत सहित) के संकलन से संबंधित परियोजना कार्य एवं मौखिकी — 15 अंक

अथवा

प्रदत्त अपठित श्लोकों में छंद एवं अलंकार निर्धारण विषयक प्रायोगिकी

ख. लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ/लघु उत्तरीय) — 10 अंक

Rahul Kumar

विषय - संस्कृत पाठ्यक्रम	
सेमेस्टर	पंचम
प्रश्नपत्र कोड	A020501T
प्रश्नपत्र शीर्षक	प्रथम प्रश्न-पत्र - वैदिक वाङ्मय एवं भारतीय दर्शन
क्रेडिट	6 अधिकतम अंक 75 +25

पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- विद्यार्थियों को वैदिक वाङ्मय एवं संस्कति का ज्ञान प्राप्त कराना।
- वेदोक्त संदेशों एवं मूल्यों के माध्यम से आचरण का उदात्तीकरण करने में समर्थ बनाना
- उपनिषद् का सामान्य परिचय एवं निहित उपदेशोंका अवबोध करने में सक्षम बनाना।
- दार्शनिक तत्वों के प्रति विश्लेषणात्मक एवं तार्किक क्षमता का विकास करना।

अधिगम उपलब्धि -

- विद्यार्थी वैदिक वाङ्य एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- वैदिक औपनिषदिक संस्कृति के प्रति बोध होगा।
- वेदोक्त संदेशों एवं मूल्यों के माध्यम से आचरण का उदात्तीकरण होगा।
- उपनिषद् का सामान्य परिचय एवं निहित उपदेशों का अवबोध करने में समर्थ हो सकेंगे।
- औपनिषदिक कर्म संयम भक्ति एवं त्यागमूलक संस्कृति से परिचित हो सकेंगे।
- भारतीय दार्शनिक आध्यात्मिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिदृश्य का निदर्शन होगा।
- भारतीय दार्शनिक तत्वों का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।
- दर्शन में विद्यमान नैतिक एवं कल्याणपरक तथ्यों से आत्मोत्कर्ष की अभिप्रेरणा प्राप्त होगी।
- भारतीय दर्शन में निहित उद्देश्यों एवं ज्ञान को आचरण में समाहित करने हेतु अभिप्रेरित होंगे।
- गीता ज्ञान रहस्य द्वारा सृष्टि कल्याणार्थ भाव विकसित होंगे।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
1.	वैदिक वाङ्म का सामान्य परिचय (संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् एवं वेदांग)। ईशावास्योपनिषद्। (व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न)
1I.	ऋग्वेद संहिता - अग्नि सूक्त (1.1), विष्णु सूक्त (1.154), पुरूष सूक्त (10.90), हिरण्यगर्भ सूक्त (10.121)। यजुर्वेद संहिता - शिव संकल्प सूक्त अथर्ववेद संहिता - पृथ्वी सूक्त (12.1) (1 से 12 मंत्र)

Rahul Km

III.	भारतीय दर्शन का सामान्य परिचय। दर्शन का अर्थ एवं महत्त्व नास्तिक दर्शन - चार्वाक, जैन, और बौद्ध। आस्तिक दर्शन - न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा एवं वेदांत (परिचयात्मक प्रश्न) श्रीमद्भगवद्गीता - द्वितीय अध्याय व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न
IV.	तर्कसंग्रह -सम्पूर्ण

संस्तुत ग्रंथः-

- ईशावास्योपनिषद्, डॉ शिव प्रसाद द्विवेदी चौखंबा, वाराणसी
- ईशावास्योपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर, 1994
- ऋग्वेद संहिता राम गोविंद त्रिवेदी चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी
- ऋक्सूक्त संग्रह, हरिदत्त शास्त्री, साहित्य भंडार, मेरठ
- सूक्त संकलन, प्रोफेसर विश्वंभर नाथ त्रिपाठी, चौखंबा प्रकाशन
- सूक्त संकलन, डॉ उमेश चंद्र पांडे, प्राच्य भारती प्रकाशन, गोरखपु
- काव्यदीपिका, कांति चंद्र भट्टाचार्य, साहित्य भंडार, मेरठ
- काव्यदीपिका, डॉ. बाबूराम त्रिपाठी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुद्रित 2012
- हायर संस्कृत ग्रामर, मोरेश्वर रामचंद्र काले, (हिन्दी अनुवादक) कपिलदेव द्विवेदी, श्री रामनारायण लाल बेनी प्रसाद, इलाहबाद, 2001
- संस्कृत व्याकरण एवं अनुवाद कला, ललित कुमार मंडल, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली 2007
- अनुवाद चंद्रिका, डॉ यदुनंदन मिश्र, अनुवाद चंद्रिका, ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
- संस्कृत रचना, वी0 एस0 आप्टे (अनु0) उमेश चंद्र पांडेय, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी, 2008
- संस्कृत निबंध सुधा, राधेश्याम गंगवार, नागराज प्रकाशन, पिथौरागढ़, 2005

प्रस्तावित सता मूल्यांकनः-

क. अधिन्यास (आरइलमेंट) एवं मौखिकी

अथवा

किसी एक छंद अथवा अलंकार के लक्षण एवं न्यूनतम 10 उदाहरण (संगीत सहित) के संकलन से संबंधित परियोजना कार्य एवं मौखिकी — 15 अंक

अथवा

प्रदत्त अपठित श्लोकों में छंद एवं अलंकार निर्धारण विषयक प्रायोगिकी

ख. लिखित परीक्षा (वास्तुनिष्ठ/लघु उत्तरीय) — 10 अंक

Rahul Ku

विषय - संस्कृत

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर	पंचम
प्रश्नपत्र कोड	A020502T
प्रश्नपत्र शीर्षक	द्वितीय प्रश्न-पत्र - व्याकरण एवं भाषा विज्ञान
क्रेडिट	6 अधिकतम अंक 75 +25

पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- विद्यार्थियों को भाषा विज्ञान के उद्भव एवं विकास का सामान्य ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ बनाना।
- भाषा एवं भाषा विज्ञान की उपयोगिता एवं महत्व से सुपरिचित कराना।
- संस्कृत भाषा एवं व्याकरण की वैज्ञानिकता का अवबोध ज्ञान कराना।
- पदों की सिद्धि प्रक्रिया के माध्यम से शब्द निर्माण की वैज्ञानिकता से परिचित कराना।

अधिगम उपलब्धि -

- भाषा विज्ञान के उद्भव एवं विकास का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।
- विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा एवं व्याकरण की वैज्ञानिकता का अवबोध होगा।
- विद्यार्थी वैदिक तथा लौकिक संस्कृत कीं तुलना करने में समर्थ हो सकेंगे।
- पदों की सिद्धि प्रक्रिया के माध्यम से शब्द निर्माण की वैज्ञानिकता से परिचित होंगे।
- उनमें संस्कृत भाषा के शुद्ध उच्चारण एवं लेखन का कौशल विकसित होगा।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
1.	धातु रूप सिद्धि (लघु सिद्धांत कौमुदी) - भू तथा एध्। (सूत्र व्याख्या एवं रूप सिद्धि)। कृदन्त प्रकरण (लघु सिद्धांत कौमुदी) कृत्य - तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत् कृत् - तुमुन्, क्त्वा, ल्यप्, क्त, क्तवतु, शतृ, शानच्, ण्वुल्, तृच्।
1I.	तद्धित प्रकरण - अपत्यार्थ (लघु सिद्धांत कौमुदी) विभक्त्यर्थ प्रकरण (लघु सिद्धांत कौमुदी)
1II.	समास प्रकरण - केवल समास (लघु सिद्धांत कौमुदी) अव्ययी भाव, तत्पुरुष। स्त्री प्रत्यय (लघु सिद्धांत कौमुदी) - टाप्, ङीप्
1V.	भाषा की परिभाषा एवं स्वरूप। भाषा का उद्भव एवं विकास। ध्वनि परिवर्तन की दिशाएं एवं कारण। वैदिक तथा लौकिक संस्कृत में अन्तर

संस्तुत ग्रंथः-

- लघु सिद्धांत कौमुदी, वरदराज, भैमी व्याख्या, भीमसेन शास्त्री (1-6 भाग), भैमी प्रकाशन, दिल्ली 1993
- लघु सिद्धांत कौमुदी, गोविन्द प्रसाद शर्मा एवं आचार्य रघुनाथ शास्त्री, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन
- लघु सिद्धांत कौमुदी, डॉ उमेश चंद्र पांडे, चौखंबा प्रकाशन
- लघु सिद्धांत कौमुदी, डॉ रामकृष्ण आचार्य. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- कृदन्तसूत्रावली, बृजेश कुमार शुक्ल, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ
- भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र, कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, द्वादश संस्करण 2010
- भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

प्रस्तावित सतत मूल्यांकनः-

क. अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी — 15 अंक

अथवा

संस्कृत संभाषण

ख. लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ/लघु उत्तरीय) — 10 अंक

Rahul Khu

विषय - संस्कृत

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर	षष्ठ
प्रश्नपत्र कोड	A020601T
प्रश्नपत्र शीर्षक	प्रथम प्रश्न-पत्र - आधुनिक संस्कृत साहित्य
क्रेडिट	6 अधिकतम अंक 75 +25

पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- विद्यार्थियों को आधुनिक संस्कृत- कवियों से सुपरिचित कराना।
- विद्यार्थियों को बिम्बविधानो एवं नवीन विषयों का ज्ञान कराना।
- आधुनिक संस्कृत - साहित्य में विद्यमान नैतिक एवं कल्याणपरक तथ्यों से आत्मोत्कर्ष की अभिप्रेषण कराना।
- आधुनिक संस्कृत - साहित्य में निहित उद्देश्यों एवं ज्ञान को आचरण में समाहित करने हेतु अभिप्रेरिस कराना।

अधिगम उपलब्धि -

- विद्यार्थी आधुनिक संस्कृत- कवियों से सुपरिचित हो सकेंगे।
- उन्हें नवीन बिम्बविधानों एवं नवीन विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- आधुनिक संस्कृत - साहित्य के बाल-साहित्य से परिचित होते हुए संस्कृत-शिक्षण की सरलतम विधि के प्रति उन्मुख होंगे।
- आधुनिक संस्कृत - साहित्य में विद्यमान नैतिक एवं कल्याणपरक तथ्यों से आत्मोत्कर्ष की अभिप्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे।
- आधुनिक संस्कृत-साहित्य में निहित उद्देश्यों एवं ज्ञान को आचरण में समाहित करने हेतु अभिप्रेरित होंगे।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
1.	आधुनिक महाकाव्य उत्तरसीताचरितम् (सप्तम सर्ग - विद्याधिगम:) प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी
1I.	आधुनिक - नाटक क्षत्रपति साम्राज्यम् (प्रथम अंक) श्रीमूलशंरमाणिकलाल ''याज्ञिक'' संस्कृत गीतिकाव्य तदेव गगनं सैव धरा (1 से 30 पद्य) आचार्य श्रीनिवास ''रथ''
1II.	संस्कृत उपन्यास पद्मिनी - प्रथम विराम - मोहन लाल शर्मा पांडे
1V.	संस्कृत कथा कथा मुक्तावली (क्षणिक विभ्रम:) पण्डिता क्षमाराव।

संस्तुत ग्रंथः-

- कथा मुक्तावली (पण्डिता क्षमाराव) **P.J. Pandya for N.M. Tripathi Ltd. Princess Street, Bombay -2**
- उत्तरसीताचरितम् - (प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी) कालिदास संस्थानम्, वाराणसी - 5
- क्षत्रपति सम्राज्यम् - श्रीमूलशंकरमाणिकलालयाज्ञिक, व्याख्याकार - डा.नरेश झा, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
- तदेव गगनं सैव धरा - आचार्य श्रीनिवास ''रथ'' नाग पब्लिशर्स 1995
- पद्मिनी मोहन लाल शर्मा पांडे, पांडे प्रकाशन जयपुर
- आधुनिक संस्कृत साहित्य संदर्भ सूची, (संपादक) राधावल्लभ त्रिपाठी राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली

प्रस्तावित सतत मूल्यांकनः-

क.	आधुनिक संस्कृत पुस्तक समीक्षा एवं मौखिकी	15 अंक
	अथवा	
	आधुनिक संस्कृत साहित्य का सर्वेक्षण एवं मौखिकी	
ख.	लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ/लघु उत्तरीय)	10 अंक

विषय - संस्कृत

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर	षष्ठ
प्रश्नपत्र कोड	A020602T
प्रश्नपत्र शीर्षक	द्वितीय प्रश्न-पत्र - क (वैकल्पिक) योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा
क्रेडिट	6 अधिकतम अंक 75 +25

पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- विद्यार्थियों को भारतीय योग शास्त्र के प्राचीन एवं वैज्ञानिक ज्ञान से लाभान्वित करना।
- विद्यार्थियों को योग शास्त्र के मूलभूत सिद्धांतों का ज्ञान कराकर उन्हें योग की महत्ता से परिचित कराना।
- योग के आसनों के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक दोनो पक्षों से समान रूप से अवगत कराना।
- योग के वास्तविक स्वरूप के अवबोध द्वारा योग को अपने जीवन में समाहित करने हेतु प्रेरित करना।

अधिगम उपलब्धि -

- विद्यार्थी भारतीय योग शास्त्र के प्राचीन एवं वैज्ञानिक ज्ञान लाभान्वित होंगे।
- विद्यार्थी योग शास्त्र के मूलभूत सिद्धांतों को जानकर योग की महत्ता से परिचित होंगे।
- योग के आसानों के सैद्धान्ति एवं व्यवहारिक दोनो पक्षों को समान रूप से सीख सकेंगे।
- योग के वास्तविक स्वरूप के अवबोध द्वारा योग को अपने जीवन में समाहित करने हेतु प्रेरित होंगे।
- योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के अनुप्रयोग द्वारा स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकने में समर्थ होंगे।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
1.	योग की भारतीय अवधारणा उपयोगिता एवं महत्व प्रमुख आचार्य एवं ग्रंथ योगसूत्र - समाधि पाद (सूत्र 1 से 29 तक)
1I.	योगसूत्र साधन पाद (सूत्र 29 से 55 तक) योगसूत्र - विभूति पाद (सूत्र 1 से 15 तक)
1II.	घेरण्ड संहिता - प्रथमोपदेश श्लोक (1 से 40 तक)
1V.	घेरण्ड संहिता - द्वितयोपदेश: (आसनप्रकरणम्) सिंहासन, पद्मासन, भद्रासन, मुक्तासन, बज्रासन, सिंहासन, गोमुखसन, वीरासन, धनुरासन, मृतासन, मत्स्यासन, पश्चिमोत्तानासन, गरूड़ासन, मकरासन, भुजङ्गासन।

Rahul

संस्तुत ग्रंथः-

- पातंजलयोगदर्शनम, पतंजलि कृत योगसूत्र, व्यास भाष्य, वाचस्पति मिश्र कृत तत्त्ववैशारदी एवं विज्ञान भिक्षु कृत योगवार्त्तिक सहित, (संपादक) नारायण मिश्र, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, 1981
- योग दर्शन, हरि कृष्णदास योगन्दका, गीता प्रेस, गोरखपुर
- पातंजलयोगदर्शनम, सुरेश चंद्र श्रीवास्तव, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी
- घेरण्ड संहिता, घेरण्ड मुनि, भाष्यकार स्वामी जी महाराज, पीतांबरा पीठ, दतिया, मध्य प्रदेश
- यज्ञ चिकित्सा, ब्रह्मवर्चस, शान्तिकुंज, हरिद्वार
- योग तथा मानसिक स्वास्थ्य, पी. डी. मिश्र, रॉयल बुक कम्पनी, लखनऊ
- योग एवं स्वास्थ्य, पी. डी. मिश्र, रैपिडेक्स बुक्स, पुस्तक महल
- सूर्य किरण चिकित्सा विज्ञान, अमर जीत, खंड़ेलवाल प्रकाशन, जयपुर
- नेचर क्योर फिलासफी एंड मेथड्स, पी. डी. मिश्र, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

प्रस्तावित सतत मूल्यांकनः-

क. योगासनों का प्रदर्शन — 15 अंक

अथवा

अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी

ख. लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ/लघु उत्तरीय) — 10 अंक

विषय - संस्कृत
पाठ्यक्रम

सेमेस्टर	षष्ठ	
प्रश्नपत्र कोड	A020603T	
प्रश्नपत्र शीर्षक	द्वितीय प्रश्न-पत्र - ख (वैकल्पिक) आयुर्वेद एवं स्वास्थ्य विज्ञान	
क्रेडिट	6	अधिकतम अंक 75 +25

पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- विद्यार्थियों को भारतीय प्राच्य ज्ञान की अद्भुत देन आयुर्वेद का ज्ञान कराना।
- विद्यार्थियों को मानव स्वास्थ्य एवं रोग निवारण हेतु आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धांतों से परिचित कराना।
- अष्टांग आयुर्वेद के ज्ञान द्वारा स्वथ्य जीवनशैली अपनाने के लिए अग्रसर कराना।

अधिगम उपलब्धि -

- भारतीय प्राच्य ज्ञान की अद्भुत देन आयुर्वेद का सामान्य ज्ञान प्राप्त करेंगें।
- मानव स्वास्थ्य एवं रोग निवारण हेतु आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धांतों से सुपरिचित होंगे।
- अष्टांग आयुर्वेद के ज्ञान द्वारा स्वथ्य जीवनशैली अपनाने के लिए अग्रसर होंगे।
- वर्तमान समय में आयुर्वेद की आवश्यकता एवं महत्व से अवगत होते हुए मानव कल्याणार्थ अनुप्रयोग हेतु प्रेरित होंगे।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
1.	आयुर्वेद का सामान्य परिचय, उद्भव एवं विकास। प्रमुख आचार्य - चरक, सुश्रुत, वाग्भट माधव, शार्ङ्गधर, भावमिश्र। आयुर्वेद का अर्थ एवं परिभाषा, मूलभूत सिद्धांत, वर्तमान काल में उपयोगिता एवं महत्व अष्टांग आयुर्वेद।
1I.	चरक संहिता - सूत्र स्थान प्रथम अध्याय (श्लोक 41 से 92) चरक संहिता - सूत्र स्थान प्रथम अध्याय (श्लोक 93 से समाप्ति पर्यंत)
1II.	चरक संहिता - सूत्र स्थान नवम अध्याय चरक संहिता - सूत्र स्थान दशम अध्याय
1V.	अष्टांगहृदयम् - वाग्भट सूत्रस्थानम् - प्रथम अध्याय 1-19 अष्टांगहृदयम् - वाग्भट सूत्रस्थानम् - प्रथम अध्याय 20-44

Rahul Kumar

संस्तुत ग्रंथः-

- चरक संहिता, (सम्पा0) ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2005
- अष्टांगहृदयम्, वाग्भट, (सम्पा0) ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली, पुनमुर्द्रित 2014
- आयुर्वेद का बृहद् इतिहास, अत्रिदेव विद्यालंकार, हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ द्वितीय संस्करण 1976
- संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, बलदेव उपाध्याय, आयुर्वेद का इतिहास (सप्तदश खंड) उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ 2006
- आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास, आचार्य प्रियव्रत शर्मा, चौखंबा वाराणसी
- आयुर्वेद इतिहास एवं परिचय, विद्याधर शुक्ल एवं रवि दत्त त्रिपाठी, चौखंबा वाराणसी
- संस्कृत साहित्य में आयुर्वे, अत्रिदेव विद्यालंकार, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी प्रथम संस्करण 1956

प्रस्तावित सतत मूल्यांकनः-

क. अधिन्यास (असाइनमेंट/पत्र प्रस्तुतीकरण एवं मौखिकी — 15 अंक

अथवा

प्रदत्त समस्या का निदान आदि (प्रायोगिक)

ख. लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ/लघु उत्तरीय) — 10 अंक

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

विषय :- संस्कृत

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर	सप्तम
प्रश्नपत्र कोड	A020701T
प्रश्नपत्र शीर्षक	प्रथम प्रश्न-पत्र - वैदिक वाङ्मय
क्रेडिट	5 अधिकतम अंक 100

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन का मूल उद्देश्य है -

- वैदिक वाङ्मय के सन्दर्भ में छात्रों को व्यापक अन्तर्दृष्टि प्रदान करना।
- वैदिक संहिता से चयनित कतिपय महत्त्वपूर्ण सूक्तों में वर्णित वैदिक देवताओं तथा वैदिक चिन्तन (विशेषत: ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति एवं राष्ट्रनिर्माण के सन्दर्भ में) का गहन अध्ययन कराना।
- वैदिक व्याकरण के ज्ञान से वैदिक भाषा के अनुपम स्वरूप में अवगत कराना।
- वैदिक संहिता की कालिक अवस्थिति तथा मन्त्रों की व्याख्या के सन्दर्भ में मत-मतान्तर से सुपरिचित कराना।
- पणिनीय शिक्षा - रूपी साधन के माध्यम से मन्त्रों के सम्यक्/विशुद्ध उच्चारण विधि से अवगत कराना।

अधिगम उपलब्धि -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र -

- वेदों में वर्णित देवतापरक सूत्रों के भावावबोध में सक्षम होंगे।
- वैदिक मन्त्रों में प्रतिपादित भौतिक एवं आध्यात्मिक भावों तथा सामाजिक संदेशों के अवबोध में सक्षम होंगे।
- वैदिक देवताओं की प्रकृति, कर्म तथा उनके प्रतिनिध्यात्मक स्वरूप से अवगत हो सकेंगे।
- वैदिक सूक्तों के प्रसिद्ध प्राचीन एवं अर्वाचीन व्याख्याकारों की व्याख्यापद्धति से सुपरिचित होंगे।
- वैदिक स्वर एवं व्याकरण के ज्ञान से वैदिक मन्त्रों को उनके विशुद्ध स्वरूप में गायन में सक्षम होंगे।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
1	ऋग्वेद - वरूण (1.25), इन्द्र (2.12), उषस् (3.61), पर्जन्य (5.83) सूक्त।
2	यजुर्वेद - शिवसङ्कल्प सूक्त अध्याय - 34,मंत्र (1 से 6) अथर्ववेद - राष्ट्राभिवर्द्धनम् (1.29)
3	संवाद सूक्त - विश्वामित्र नदी, यम-यमी पूरूरवा-उर्वशी, सरमा-पाणि संवाद सूक्तों का सामान्य परिचय।
4	पाणिनीय शिक्षा

Rahul

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक ग्रन्थ -

1. नवीन वैदिक सञ्चयनम् (द्वितीय भाग) (व्या0) डॉ0 जमुना पाठक, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2016
2. पाणिनीय शिक्षा - (व्या0) शिवराज आचार्य, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, 2012
3. वैदिक सूक्त संग्रह - (व्या0) राधेश्याम खेमका, गीताप्रेस गोरखपुर, 2015

द्वितीयक ग्रन्थ -

उपाध्याय, बलदेव, वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, शारदा संस्थान, वाराणसी, 2006

पाण्डेय, उमेशचन्द्र, वैदिक व्याकरण, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2003

अधिन्यास कार्य -

1. इन्द्रसूक्त, पुरूषसूक्त तथा शिवसंकल्प, सूक्त का सारांश लिखिए।

अथवा

वैदिक संहिता के काल-निर्धारण के सम्बन्ध में विविध मतों पर प्रकाश डालिए।

Rahul

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

विषय :- संस्कृत

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर	सप्तम
प्रश्नपत्र कोड	A020702T
प्रश्नपत्र शीर्षक	द्वितीय प्रश्नपत्र - दर्शन : सांख्य एवं न्याय - वैशेषिक
क्रेडिट	5 अधिकतम अंक 100

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

निर्धारित पाठ्यक्रम का उद्देश्य है -

- छात्रों को निर्दिष्ट ग्रन्थों यथा 'सांख्यकारिका' एवं 'तर्कभाषा' के अध्ययन के माध्यम से क्रमशः सांख्य एवं न्याय वैशेषिक दर्शन के आधारभूत सिद्धान्तों, संकल्पनाओं व मान्यताओं से अवगत कराना।
- छात्रों को भारतीय दर्शन के अनेक बहुमूल्य सिद्धांतो एवं अवधारणाओं के तार्किक विश्लेषण की क्षमता से सम्पन्न करना।

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- सांख्य एवं न्याय-वैशेषिक दर्शन के मूलभूत संप्रत्ययों एवं संकल्पनाओं के आलोचनात्मक विश्लेषण में समर्थ हो सकेंगे।
- उक्त दार्शनिक तंत्रो में स्वीकृत व अङ्गीकृत पारिभाषिक पदों के भावावबोध में सक्षम होंगे।
- उक्त दार्शनिक तंत्रों में वर्णित जगत् तथा जागतिक अनुभूतियों की व्याख्या सम्बन्धी वैज्ञानिक दृष्टिकोण
- परमतत्त्व के निर्धारण अथवा निःश्रेयस की लब्धि में प्रमाणमीमांसीय अध्ययन की महत्ता से अवगत हो सकेंगे।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
1	सांख्यकारिका - कारिका - 1 से 18 तक।
2	सांख्यकारिका - कारिका - 19 से 36 तक।
3	तर्कभाषा - प्रत्यक्ष प्रमाणपर्यन्त।
4	तर्कभाषा - अनुमान प्रमाणपर्यन्त।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक ग्रन्थ -

1. तर्कभाषा - केशव मिश्र, (व्या0) आचार्य विश्वेश्वर, चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी, 2016
2. तर्कभाषा - केशव मिश्र, (व्या0) बदरीनाथ शुक्ल, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, 2010
3. सांख्यकारिका - ईश्वर कृष्ण, (व्या0) राकेश शास्त्री, संस्कृत ग्रंथागार, दिल्ली, 2017

Rahul

4. सांख्यकारिका – ईश्वर कृष्ण, (व्या0) रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2015
अधिन्यास कार्य – 1. सांख्यकारिका के आधार पर सत्यकार्यवाद पर प्रकाश डालिए। अथवा तर्कभाषा के आधार पर षड्सन्निकर्ष को स्पष्ट कीजिए।

Rahul

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

विषय :- संस्कृत

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर	सप्तम
प्रश्नपत्र कोड	A020703T
प्रश्नपत्र शीर्षक	तृतीय प्रश्न-पत्र - व्याकरण एवं भाषा विज्ञान
क्रेडिट	5 अधिकतम अंक 100

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

निर्धारित पाठ्यक्रम का उद्देश्य है -

- छात्रों को भाषा विज्ञान एवं आधुनिक भाषा शास्त्र की प्रमुख अवधारणों से अवगत कराना।
- भाषा की परिभाषा विविध स्वरूप एवं प्रमुख विशेषताओं के सम्बन्ध ज्ञान प्रदान करना।
- ध्वनियों के वर्गीकरण एवं ध्वनि सम्बन्धि नियमों का ज्ञान कराना।
- सिद्धान्त कौमुदी ग्रन्थ के अनुसार कारक एवं विभक्ति-विषयक सूत्रों का उदाहरण सहित विशेष अध्ययन कराना।

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- कारक के सामान्य नियमोल्लेख पूर्वक सूत्रों के सोदाहरण अध्ययन से संस्कृत भाषा सम्बन्धी निज ज्ञान को पुष्ट करने में समर्थ होंगे।
- आधुनिक भाषाशास्त्रीय सिद्धांतो के आलोक में संस्कृत भाषा के अवलोकन एवं विश्लेषण में निपुण होंगे।
- भाषा के उत्पत्ति विषयक प्रमुख मतो के ज्ञान से सम्पन्न होंगे।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
1	सिद्धान्त कौमुदी - (कारक प्रकरणम्) - प्रथमा से चतुर्थी विभक्ति तक।
2	सिद्धान्त कौमुदी - (कारक प्रकरणम्) - पंचमी से सप्तमी विभक्ति तक।
3	भाषा विज्ञान - भाषा की परिभाषा, बोली, विभाषा एवं भाषा में अन्तर, भाषा और वाक् में अन्तर, भाषा की उत्पत्ति (विविध मत)।
4	भाषा विज्ञान - स्पर्श, स्पर्श संघर्षी वर्ण, अर्धस्वर, ध्वनियों का वर्गीकरण, ध्वनि परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं,ग्रिम,ग्रासमान एवं बर्नर के ध्वनि नियम।

Rahul

अध्ययन सामग्री –

प्रारम्भिक स्रोत –

1. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी – भट्टोजिदीक्षित (व्या0) पं0 ज्योतिस्वरूप मिश्र विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1996
2. तिवारी, डॉ0 भोलानाथ, भाषा विज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद, 2019
3. द्विवेदी पं0 कपिलदेव, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2016

अधिन्यास कार्य –

1. ध्वनि सम्बन्धी ग्रिम ग्रासमान एवं बर्नर नियमों का विवेचन कीजिए।

अथवा

भाषा की परिभाषा देते हुए भाषा एवं बोली में अन्तर स्पष्ट करें।

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

विषय :- संस्कृत

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर	सप्तम
प्रश्नपत्र कोड	A020704T
प्रश्नपत्र शीर्षक	चतुर्थ प्रश्न पत्र - गीतिकाव्य एवं नाटिका
क्रेडिट	5 अधिकतम अंक 100

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन का मूल उद्देश्य है -

- कवि श्रीहर्षदेवकृत 'रत्नावली' नाटिका के अध्ययन के माध्यम से रूपक एवं नाटिका के भेद का ज्ञान प्रदान करना।
- नाट्यशास्त्रियों द्वारा नाटिका-कृति की संरचना एवं अन्य पक्षों के संदर्भ में विहित नियमों की कसौटी पर 'रत्नावली' नाटिका के मूल्यांकन के निमित्त प्रेरणा प्रदान करना।
- संस्कृत काव्यजगत् के सर्वोत्कृष्ट कवि कालिदासकृत 'मेघदूत' में अवगाहन कराकर उनकी अनुपम भाषा शैली एवं अपूर्व काव्यसौन्दर्य का रसास्वादन कराना।
- महाकवि कालिदास के कृत 'मेघदूत' के अध्ययन एवं अनुशीलन के माध्यम से गतिकाव्य के स्वरूप एवं विशेषताओं से अवगत कराना।

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

1. 'रत्नावली' नाटिका के अध्ययन के माध्यम से धीरललित नायक तथा स्वकीया-परकीया नायिका की विशेषताओं से अवगत होंगे।

- गतिकाव्यों में सन्निहित गेयात्मकता से सम्यग्रूपेण अवगत होंगे।
- 'मेघदूत' में चित्रित वाह्य प्रकृति में मानवीय संवेदना की संक्रान्ति से जन्य लोकोत्तर आनन्द की अनुभूति में सफल होंगे।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
1	मेघदूतम् (पूर्व मेघ) - पद्य 1 से 30 तक
2	मेघदूतम् (पूर्व मेघ) - पद्य 31 से समाप्ति पर्यन्त।
3	रत्नावली नाटिका - प्रथम एवं द्वितीय अंक
4	रत्नावली नाटिका - तृतीय एवं चतुर्थ अंक

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक स्रोत -

1. मेघदूतम्, कालिदास, (व्या0) डॉ0 रमाशंकर त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2015
2. मेघदूतम्, कालिदास, (व्या0) आचार्य शेषराज रेग्मी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016
3. रत्नावली (नाटिका) -श्री हर्षदेव (व्या0) - डॉ0 श्री कृष्ण त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी, 2008

4. रत्नावली (नाटिका) -श्री हर्षदेव (व्या0) - डॉ0 श्री कृष्ण त्रिपाठी, पं0 परमेश्वर दीन पाण्डेय
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2003

अधिन्यास कार्य -

1. रत्नावली नाटिका का एक नाटिका के रूप में मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

मेघदूत में वर्णित मेघ के मार्ग का वर्णन कीजिए।

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

विषय :- संस्कृत

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर	अष्टम	
प्रश्नपत्र कोड	A020801T	
प्रश्नपत्र शीर्षक	प्रथम प्रश्न-पत्र - वैदिक वाङ्मय	
क्रेडिट	5	अधिकतम अंक 100

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन का मूल उद्देश्य है -

- विविध वैदिक सूक्तो एवं उनके प्रतिपाद्य विषय से परिचित कराना।
- उपनिषदों में प्रतिपादित मूल दार्शनिक सिद्धान्तों अथवा सम्प्रत्ययों से अवगत कराना।
- यास्ककृत निरूक्त के अध्ययन के माध्यम से वैदिक पदों की प्रकृति, स्वरूप तथा निर्वचन-सम्बन्धी सिद्धान्तों एवं प्रक्रिया का विशेष ज्ञान अर्जित कराना।
- उपसर्गों के विविध अर्थो एवं विविध शब्दों की व्युत्पत्ति का ज्ञान कराना।

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- वैदिक वाङ्मय के बहुआयामी स्वरूप के संदर्भ में जागृत होंगे।
- वैदिक संहिता के सम्यक् अध्ययन के निमित्त अपेक्षित साधनों से सम्पन्न हो सकेंगे।
- प्रमुख उपनिषदों के दार्शनिक संदेशो की हृदयंगम कर जगत् के प्रति विशेष अर्न्तदृष्टि से युक्त होंगे।
- वैदिक पदों के विविध स्वरूप एवं वैज्ञानिक निर्वचन पद्धति के अवबोध में सक्षम होंगे।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
1	ऋग्वेद - अक्षसूक्त (10.34), ज्ञानसूक्त (10.71), नासदीय सूक्त (10.129)।
2	यजुर्वेद - प्रजापति सूक्त - अध्याय 23, मन्त्र 1 से 5 तक अथर्ववेद - कालसूक्त (10.53), पृथिवी सूक्त (12.1)प्रथम द्वादश मन्त्र।
3	प्रमुख दश उपनिषदों का सामान्य परिचय।
4	निरूक्त - (प्रथम एवं द्वितीय अध्याय) - पदों का चतुर्विध विभाजन, नामाख्यात स्वरूप, उपसर्गों का अर्थ, निपात की कोटियाँ, निरूक्त अध्ययन के प्रयोजन, निर्वचन के सिद्धान्त एवं आचार्य आदि शब्दों की व्युत्पत्ति।

38 Rahul

अध्ययन सामग्री –

प्रारम्भिक ग्रन्थ –

1. नवीन वैदिकसंचयनम् (द्वितीय भाग) (व्या0) डॉ0 जमुना पाठक चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी 2016
2. ईशादि नौ उपनिषद, गीता प्रेस गोरखपुर 2017
3. निरूक्त – यास्क (सम्पा0) प्रो0 उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2001

द्वितीयक ग्रन्थ –

1. उपाध्याय, बलदेव – वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, शारदा संस्थान वाराणसी, 2006

अधिन्यास कार्य –

1. पाठ्यक्रम के किन्हीं दो उपनिषदों की विषय वस्तु पर प्रकाश डालिए।

अथवा

षड्भाव विकारों एवं शब्द की नित्यता एवं अनित्यता पर प्रकाश डालिए।

अधिन्यास कार्य -

1. सांख्य कारिका के 37 से 54 कारिका तक वर्णित विषय वस्तु को संक्षेप में लिखिए।

अथवा

तर्कभाषा के आधार पर उपमान प्रमाण एवं प्रमेय निरूपण को स्पष्ट कीजिए।

8/8

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

विषय :- संस्कृत

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर	अष्टम
प्रश्नपत्र कोड	A020803T
प्रश्नपत्र शीर्षक	तृतीय प्रश्न-पत्र - व्याकरण एवं भाषा विज्ञान
क्रेडिट	5 अधिकतम अंक 100

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

1. भाषा के वर्गीकरण का ज्ञान कराना एवं वैदिक तथा लौकिक संस्कृत में तुलना करने में समर्थ बनाना।
2. अर्थ परिवर्तन की दिशाओं एवं उनके कारणों का ज्ञान कराना।
3. महाभाष्य के माध्यम से भाषा के दार्शनिक सम्प्रत्ययों से अवगत कराना।

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- व्याकरण अध्ययन की महत्ता, प्रासङ्गिकता एवं उद्देश्यों से सुपरिचित होंगे।
- भाषाशास्त्रीय चिंतन में प्राचीन भारतीय भाषादार्शनिकों के अवदान के सन्दर्भ में सुविज्ञ होंगे।
- वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत की तुलना करने में समर्थ हो सकेंगे।
- भाषाओं का आकृतिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण का अवगाहन करने में समर्थ हो सकेंगे।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
1.	महाभाष्य, पस्पशाह्निक - प्रारम्भ से व्याकरण के गौण प्रयोजन पर्यन्त।
2.	महाभाष्य, पस्पशाह्निक - शब्दानुशासन की पद्धति से समाप्तिपर्यन्त।
3.	भाषा विज्ञान - वाक्य की परिभाषा एवं प्रकार, अर्थ परिर्वतन की दिशाएं एवं कारण।
4.	भाषा विज्ञान - भाषा का आकृतिमूलक एव पारिवारिक वर्गीकरण, भारोपीय भाषाओं का परिचय, वैदिक एवं लौकिक संस्कृत की तुलना।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक ग्रन्थ -

1. व्याकरणमहाभाष्यम् (पस्पशाह्निक), जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
2. व्याकरणमहाभाष्यम् (पस्पशाह्निक), आचार्य मधुसूदन प्रसाद मिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
3. तिवारी, डॉ0 भोलानाथ, भाषा विज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद, 2019
4. द्विवेदी पं0 कपिलदेव, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2016
5. व्यास, भोलाशंकर, संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन चौखम्बा विद्याभवन, 1957

अधिन्यास कार्य -

1. भाषाओं के आकृतिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण पर प्रकाश डालें।

अथवा

महाभाष्य के पस्पशाह्निक के आधार पर व्याकरण-अध्ययन के प्रयोजन पर प्रकाश डालिए।

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

विषय :- संस्कृत

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर	अष्टम
प्रश्नपत्र कोड	A020804T
प्रश्नपत्र शीर्षक	चतुर्थ प्रश्न-पत्र - काव्य एवं नाट्यशास्त्र
क्रेडिट	5 अधिकतम अंक 100

(क) पाठ्यक्रम उद्देश्य -

- रघुवंश महाकाव्य के प्रथम सर्ग से छात्रों को परिचित कराना एवं महाकाव्य की कसौटी पर रघुवंश महाकाव्य का मूल्यांकन करने में समर्थ बनाना।
- छात्रों को भरतमुनिकृत 'नाट्यशास्त्र' के अध्ययन के माध्यम से भारतीय नाट्यविद्या के बहुआयामी स्वरूप से सुपरिचित कराना।
- भरतमुनि की रसविषयक मान्यताओं से अवगत कराना।

(ख) पाठ्यक्रम अधिगम प्रतिफल -

निर्धारित पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र-

- काव्य के रसास्वादन के लिए अपेक्षित सूक्ष्म भावों से सम्पन्न होंगे।
- महाकाव्य की कसौटी पर रघुवंश महाकाव्य का मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।
- ग्रंथ में विवेचित नाट्य एवं काव्य के भावों को हृदयंगम कर आलोचनात्मक मूल्यांकन में सक्षम होंगे।
- भरतमुनि द्वारा उपस्थापित नाट्य एवं काव्य के कतिपय आधारभूत पारिभाषिक पदों से अवगत होंगे।
- 'रस' एवं 'ध्वनि' के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में विशिष्ट एवं गहन ज्ञानसम्पन्न होंगे।
- निर्धारित ग्रन्थ के अवबोध एवं व्याख्या में समर्थ होंगे।

Unit इकाई	Topics पाठ्य विषय
1	रघुवंशम् (प्रथम सर्ग) - पद्य 1 से 45 तक।
2	रघुवंशम् (प्रथम सर्ग) - पद्य 46 से अन्त तक।
3	नाट्यशास्त्रम् (षष्ठ अध्याय) - कारिका 1 से 40 तक।
4	नाट्यशास्त्रम् (षष्ठ अध्याय) - कारिका 41 से अन्त तक।

अध्ययन सामग्री -

प्रारम्भिक ग्रन्थ -

1. रघुवंश महाकाव्यम् (कालिदासविरचितम्) 'रश्मि' सरलार्थ हिन्दी व्याख्या, डॉ. बलवान सिंह यादव, चौ.स.भ., वाराणसी, 2018
2. रघुवंश महाकाव्यम् (कालिदासविरचितम्) मल्लिनाथ विरचित 'संजीवनी' सन्दर्भ प्रसंग अन्वय, संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित डॉ. नर्मदेश्वर त्रिपाठी, भारतीय विद्या संस्थान वाराणसी, 2009।
3. नाट्यशास्त्र (षष्ठ अध्याय), भरतमुनि (सम्पा0) बटुकनाथ शर्मा एवं पं0 बलदेव उपाध्याय, काशी संस्कृत सीरीज, वाराणसी
4. नाट्यशास्त्र (षष्ठ अध्याय), भरतमुनि (व्या0) ब्रजमोहन चतुर्वेदी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली।

Rahul

अधिन्यास कार्य -

1. रघुवंशम् प्रथम सर्ग का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

आचार्य भरत के रससूत्र की व्याख्या कीजिए एवं इस पर विभिन्न आचार्यों के मतों को स्पष्ट कीजिए।

Rahul